सच्चे शागिर्द के अनमिट निशान

sachche shāgird ke anmiṭ nishān

Indelible Marks of a True Disciple

by Bakhtullah

[Ao, Khud Dekh Lo 32]

(Urdu—Hindi script)

© 2024 www.chashmamedia.org
published and printed by
Good Word, New Delhi

The title cover is derived from Clker-Free-Vector-Images https://pixabay.com/illustrations/human-feet-footprint-pattern-feet-6300803/; https://pixabay.com/illustrations/texture-vintage-aged-paper-light-318903/.

Bible quotations are from UGV.

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

फ़हरिस्त

मसीह के जलाल में शरीक	1
बदली हुई ज़िंदगी	3
शैतानी ताक़तों से महफ़ूज़	5
ख़ुदा के लिए मख़सूस	8
बिरादरी में एक	9
एक दिन मसीह के पास	12
इंजील, यूहन्ना 17:1-26	14

ईसा मसीह जानता था कि जल्द ही दुश्मन मुझे सलीब पर चढ़ाकर मार डालेंगे। उसने अपने शागिर्दों को आख़िरी हिदायात दीं, फिर अपनी नज़र आसमान की तरफ़ उठाकर दुआ की।

► **दुआ का क्या मक़सद था?**

मक़सद यह था कि वह अपने शागिर्दों को ख़ुदा बाप के सुपुर्द करे। इस दुआ में सच्चे शागिर्द के छः निशान दिखाई देते हैं। पहला निशान,

मसीह के जलाल में शरीक

ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> ऐ बाप, वक़्त आ गया है। अपने फ़रज़ंद को जलाल दे ताकि फ़रज़ंद तुझे जलाल दे। क्योंकि तूने उसे तमाम इनसानों पर इख़्तियार दिया है ताकि वह उन सबको अबदी ज़िंदगी दे जो तूने उसे दिए हैं।
> (यूहन्ना 17:1-2)

► **ईसा मसीह ख़ुदा बाप से क्या पाना चाहता है?**

जलाल।

► **वह क्यों जलाल पाना चाहता है?**
जलाल पाने का एक ही मक़सद है, यह कि वह ख़ुदा बाप को जलाल दे। मतलब है जो भी काम ईसा मसीह करे इससे ख़ुदा बाप को इज़्ज़तो-जलाल मिले।

► **ईसा मसीह किस तरह ख़ुदा बाप को जलाल देना चाहता है?**
वह अपनी जान इनसान की ख़ातिर देने से ख़ुदा बाप को जलाल देना चाहता है। कितना अनोखा ख़याल! ऐसी सोच दुनिया की सोच से कहीं दूर है। दुनिया के ख़याल में ईसा मसीह अपनी जान देने से फ़ेल हो गया। वह यह कभी नहीं मान सकती कि किसी की सलीबी मौत ख़ुदा को जलाल दे सकती है।

► **बाप ने ईसा मसीह को इनसानों पर इख़्तियार क्यों दिया?**
इसलिए कि वह अपनी जान देने से इनसान को अबदी ज़िंदगी दे। यही तो उसके आने का मक़सद था। और इसी से उसे जलाल मिलेगा।

► **यह बात हमारे लिए क्यों अहम है कि मसीह को जलाल मिलेगा?**
यह बात इसलिए अहम है कि जो भी मसीह पर ईमान लाता है वह उसके जलाल में शरीक हो जाता है। यूहन्ना 15 में हम सीख चुके हैं कि ईसा मसीह अंगूर की बेल है। उसकी जलाली राह से ही हम उससे जुड़ गए हैं, हम उसकी शाख़ें बन गए हैं। उसकी जलाली राह

से ही हमें उसकी अबदी ज़िंदगी मिल गई है। और उसकी जलाली राह से ही हम उसकी शानो-शौकत में शरीक हो गए हैं।

► **क्या आप इस बेल में जुड़कर उसके जलाल में शरीक हो गए हैं?**

सच्चे शागिर्द का दूसरा निशान,

बदली हुई ज़िंदगी

अब ईसा मसीह ने बाप को अपनी ख़िदमत का अच्छा नतीजा पेश किया।

► **नतीजा क्या था?**

शागिर्दों की बदली हुई ज़िंदगी। उसने फ़रमाया,

> मैंने तेरा नाम उन लोगों पर ज़ाहिर किया जिन्हें तूने दुनिया से अलग करके मुझे दिया है। वह तेरे ही थे। तूने उन्हें मुझे दिया और उन्होंने तेरे कलाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारी है। (यूहन्ना 17:6)

► **मसीह की ख़ास ख़िदमत क्या थी?**

उसने लोगों पर ख़ुदा बाप का नाम ज़ाहिर किया।

► **ख़ुदा का नाम ज़ाहिर करने का क्या मतलब है?**

मतलब यह है कि उसने ख़ुदा की फ़ितरत ज़ाहिर की। सच्चा शागिर्द बनने के लिए ज़रूरी है कि हम जान लें कि ख़ुदा हमसे मुहब्बत रखता है और हमें अपने क़रीब लाना चाहता है, कि उसने हमें क़रीब लाने

के लिए अपना फ़रज़ंद क़ुरबान किया। यही बातें उसके नाम में पिनहाँ हैं।

► **जब ख़ुदा का नाम शागिर्दों पर ज़ाहिर हुआ तो उनमें क्या तबदीली आई?**

ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> उन्होंने तेरे कलाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारी है। अब उन्होंने जान लिया है कि जो कुछ भी तूने मुझे दिया है वह तेरी तरफ़ से है। उन्होंने यह बातें क़बूल करके हक़ीक़ी तौर पर जान लिया कि मैं तुझमें से निकलकर आया हूँ। साथ साथ वह ईमान भी लाए कि तूने मुझे भेजा है। (यूहन्ना 17:6-8)

► **क्या तबदीली आई?**

कलाम सुनने से उनका चाल-चलन बदल गया।

► **यह तबदीली क्यों आई?**

उन्होंने जान लिया है कि मसीह का कलाम और काम ख़ुदा की तरफ़ से है, कि ईसा मसीह ख़ुदा बाप से निकल आया है जिसने उसे भेजा है।

देखो, हमारी तबदीली सरासर मसीह पर मबनी होती है। जब हम अंगूर की इस बेल से जुड़ जाते हैं तो उसका रस हमारी ज़िंदगी बदल देता है। उस रस के बग़ैर हम जंगली और बेकार फल लाते हैं, ऐसा फल जिससे

सबको घिन आती है। लेकिन जब उसका रस हमारे रगों में दौड़ता है तो हम मीठा और रसीला फल लाते हैं, ऐसा फल जो हर एक चखकर वाह, वाह कहता है।

► **क्या आप में बेल से लाई यह तबदीली आई है?**

सच्चे शागिर्द का तीसरा निशान,

शैतानी ताक़तों से महफ़ूज़

अब तक ईसा मसीह शागिर्दों के साथ था। उसकी मौजूदगी में वह हमेशा मज़बूत रहे थे, क्योंकि वह उनका अच्छा चरवाहा था। लेकिन अब वह अपने बाप के पास वापस जा रहा था। अब क्या होगा? यही दुआ का मरकज़ी मक़सद था। इसमें ईसा मसीह ने उन्हें ख़ुदा बाप के सुपुर्द किया ताकि वह उन्हें महफ़ूज़ रखे। ईसा मसीह ने इसकी वजह भी बताई,

> जिन्हें तूने मुझे दिया है [...] वह तेरे ही हैं।
> (यूहन्ना 17:9)

ख़ुदा बाप ख़ुद ने ईमानदारों को अलग करके मसीह को दिया था (यूहन्ना 17:6)। अब ईसा मसीह ने उन्हें दुबारा उसके सुपुर्द किया। उसने फ़रमाया,

> क़ुद्दूस बाप, अपने नाम में उन्हें महफ़ूज़ रख। [...]
> जितनी देर मैं उनके साथ रहा मैंने उन्हें तेरे नाम में

> महफ़ूज़ रखा, उसी नाम में जो तूने मुझे दिया था। (यूहन्ना 17:11-12)

► **ईसा मसीह ने उन्हें किस नाम में महफ़ूज़ रखा था?**

ख़ुदा बाप के नाम में।

► **उसके नाम में वह क्यों महफ़ूज़ थे?**

नाम में ख़ुदा का पूरा किरदार है। उसमें उसकी अपने लोगों के लिए मुहब्बत और वफ़ादारी है। यही नाम ईसा मसीह ने अपने शागिर्दों पर ज़ाहिर किया था, और इसी में उसने उन्हें महफ़ूज़ रखा था। अब वह चाहता है कि ख़ुदा बाप यह काम जारी रखे।

► **क्या महफ़ूज़ रहने से मुश्किलात कम हो जाएँगी?**

नहीं। ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> मैंने उन्हें तेरा कलाम दिया है और दुनिया ने उनसे दुश्मनी रखी, क्योंकि यह दुनिया के नहीं हैं, जिस तरह मैं भी दुनिया का नहीं हूँ। मेरी दुआ यह नहीं है कि तू उन्हें दुनिया से उठा ले बल्कि यह कि उन्हें इबलीस से महफ़ूज़ रखे। (यूहन्ना 17:14-15)

► **दुनिया ने उनसे दुश्मनी रखी। क्यों?**

उन्हें मसीह का कलाम मिल गया है, इसलिए यह दुनिया के नहीं हैं।

► **वह क्यों दुनिया के नहीं हैं?**

ईसा मसीह दुनिया का नहीं है, इसलिए उसके शागिर्द भी दुनिया के नहीं हैं।

► **दुनिया क्या है? क्या यह ख़ुदा की ख़लक़ की गई दुनिया है?**
नहीं। ख़ुदा ने हर मख़लूक़ अच्छी बनाई है। वह चाहता है कि हम दुनिया की अच्छी चीज़ों का मज़ा लें। लेकिन यहाँ दुनिया से मुराद वह सब कुछ है जो ख़ुदा के ख़िलाफ़ है और जिसका हुक्मरान इबलीस है। यानी तारीकी की तमाम ताक़तें जो ख़ुदा की हर अच्छी चीज़ पर क़ाबू करना चाहती हैं।

► **क्या मसीह चाहता है कि शागिर्दों को दुनिया से उठा लिया जाए?**
नहीं।

► **क्यों नहीं? क्या इससे दुनिया की दुश्मनी ख़त्म नहीं होगी?**
बेशक। लेकिन शागिर्दों का इस दुनिया में रहने का एक ख़ास मक़सद है। यह कि वह दुनिया में ख़ुदा का कलाम और नूर फैलाएँ। आख़िर मसीह के आने का मक़सद यह था कि सब उस पर ईमान लाकर हलाक न हों बल्कि अबदी ज़िंदगी पाएँ। इनमें मैं और आप भी शामिल हैं।

इसलिए मसीह की दुआ यह नहीं है कि उन्हें उठा लिया जाए बल्कि यह कि वह इबलीस और उसकी शैतानी ताक़तों से महफ़ूज़ रहें। इबलीस की पूरी कोशिश यह है कि हर ईमानदार को बिगाड़कर ख़त्म करे, क्योंकि उसे मसीह के शागिर्दों का मिशन पता है। वह

जानता है कि उन्हें इस दुनिया में इसलिए रखा गया है ताकि वह ख़ुदा का कलाम और नूर फैलाएँ, ताकि जितने हो सकें नजात पाएँ। हमें पूरी तसल्ली है कि हम ईसा मसीह के साथ जो अंगूर की बेल है जुड़ गए हैं। अब रही माली यानी ख़ुदा बाप की ज़िम्मेदारी कि वह हमारी देख-भाल करे। वही हमें जंगली जानवरों से महफ़ूज़ रखेगा, वही हमें हर ज़रूरी चीज़ से नवाज़ता रहेगा। वही इस पर ध्यान देगा कि हम अच्छा फल लाएँ।

► **क्या आपको ख़ुदा की यह हिफ़ाज़त हासिल है?**

सच्चे शागिर्द का चौथा निशान,

ख़ुदा के लिए मख़सूस

ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> उन्हें सच्चाई के वसीले से मख़सूसो-मुक़द्दस कर। तेरा कलाम ही सच्चाई है। जिस तरह तूने मुझे दुनिया में भेजा है उसी तरह मैंने भी उन्हें दुनिया में भेजा है। उनकी ख़ातिर मैं अपने आपको मख़सूस करता हूँ, ताकि उन्हें भी सच्चाई के वसीले से मख़सूसो-मुक़द्दस किया जाए। (यूहन्ना 17:17-19)

► **ईसा मसीह क्या चाहता है कि ख़ुदा बाप शागिर्दों के साथ करे?**

वह चाहता है कि वह उन्हें अपने कलाम से मख़सूसो-मुक़द्दस करे।

► **उन्हें किससे और किस तरह मख़सूसो-मुक़द्दस किया जाएगा?**

उन्हें ईसा मसीह से मख़सूस किया जाएगा। अपने आपको मख़सूस करने से मसीह उन्हें मख़सूसो-मुक़द्दस करेगा।

► **ईसा मसीह ने किस तरह अपने आपको मख़सूस किया?**
उसने अपने आपको हमारी ख़ातिर क़ुरबान करने के लिए मख़सूस किया। जल्द ही उसकी यह क़ुरबानी मुकम्मल हो जाएगी। इसी रास्ते से शागिर्द के गुनाह मिटाए जाएँगे। इससे शागिर्द पाक और मुक़द्दस होकर ख़ुदा को मंज़ूर हो जाएगा। लेकिन हर एक जिसे मसीह ने मुक़द्दस किया उसे उसने मख़सूस भी किया है।

► **मसीह ने उसे किसके लिए मख़सूस किया है?**
उसने उसे ख़ुदा के लिए मख़सूस किया है।

► **उसे किस काम के लिए मख़सूस किया गया है?**
उसे ख़ुदा और दूसरों की ख़िदमत के लिए मख़सूस किया गया है। जब हम अंगूर की बेल के साथ जुड़ जाते हैं तो हम सरासर बेल का हिस्सा बन जाते हैं। वही हमारी राहनुमाई करती है, उसी का रस हर पल हमें नई ज़िंदगी देता है। हम पूरे तौर पर उसी के हैं और उसी का मीठा फल लाते हैं।

► **क्या आपको ईसा मसीह से मख़सूस किया गया है?**
सच्चे शागिर्द का पाँचवाँ निशान,

बिरादरी में एक

ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> मेरी दुआ न सिर्फ़ इन्हीं के लिए है, बल्कि उन सबके लिए भी जो इनका पैग़ाम सुनकर मुझ पर ईमान लाएँगे ताकि सब एक हों। जिस तरह तू ऐ बाप, मुझमें है और मैं तुझमें हूँ उसी तरह वह भी हममें हों ताकि दुनिया यक़ीन करे कि तूने मुझे भेजा है। (यूहन्ना 17:20-21)

► **मसीह न सिर्फ़ पहले शागिर्दों की बात कर रहा है। कौन भी उसकी दुआ में शामिल हैं?**

बाद के सब ईमान लानेवाले भी इसमें शामिल हैं।

► **मसीह का पैग़ाम सुनाने का क्या मक़सद है?**

यह कि सब मसीह में एक हों।

► **इसका नमूना कौन हैं?**

इसका नमूना ख़ुदा बाप और फ़रज़ंद हैं, जो पूरे तौर पर एक हैं।

► **शागिर्द किस तरह एक हो जाएँगे?**

इससे कि वह ख़ुदा बाप और फ़रज़ंद में होंगे।

► **इसका क्या मतलब है?**

मसीह, ख़ुदा बाप के ताबे रहता और ख़ुदा बाप हर बात में फ़रज़ंद की सुनता रहता है। वह मुहब्बत के बंधन से घिरे रहते हैं। मसीह के नजात देनेवाले काम से उसके शागिर्द भी मुहब्बत के इस बंधन में आ जाते हैं। सिर्फ़ यह बंधन उन्हें महफ़ूज़ और एक रख सकता है।

► **ऐसी यगांगत किस तरह मुमकिन हो सकती है?**

न किसी तनज़ीम से, न किसी इदारे से। सिर्फ़ रूहुल-क़ुद्स से जो यह बंधन क़ायम रखता है। शर्त यह है कि शागिर्द सही मानों में मख़सूसो-मुक़द्दस हों। इस बंधन में रहते हुए तमाम क़ौमों के ईमानदार एक हो जाते हैं चाहे वह क़बीले और ज़बान के हिसाब से कितने मुख़्तलिफ़ क्यों न हों। ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> मैंने उन्हें वह जलाल दिया है जो तूने मुझे दिया है ताकि वह एक हों जिस तरह हम एक हैं, मैं उनमें और तू मुझमें। वह कामिल तौर पर एक हों ताकि दुनिया जान ले कि तूने मुझे भेजा और कि तूने उनसे मुहब्बत रखी है जिस तरह मुझसे रखी है। (यूहन्ना 17:22-23)

► **मसीह को किस काम से जलाल मिला है?**

हम देख चुके हैं कि उसे यह जलाल अपनी जान देने से मिला है।

► **तो शागिर्द किस तरह एक हो जाएँगे?**

शागिर्द मसीह की क़ुरबानी से मिले इस जलाल से एक हो जाएँगे। मतलब है कि वह तब एक हो जाएँगे जब ख़ुद क़ुरबानी देने के लिए तैयार रहेंगे।

► **एक होने से दुनिया क्या जान लेगी?**

इससे दुनिया जान लेगी कि ख़ुदा बाप ने शागिर्दों से मुहब्बत रखी है।

जब हम अंगूर की बेल के साथ जुड़ जाते हैं तो उसी का रस तमाम शाख़ों में दौड़ता है। उसी का रस सबके सबको ज़िंदगी देता है। यह नामुमकिन है कि बेल की कोई भी शाख़ दूसरी शाख़ के साथ एक न हो।

► **क्या आपको एक होने का तजरिबा हासिल हुआ है?**

सच्चे शागिर्द का छटा निशान,

एक दिन मसीह के पास

ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> ऐ बाप, मैं चाहता हूँ कि जो तूने मुझे दिए हैं वह भी मेरे साथ हों, वहाँ जहाँ मैं हूँ, कि वह मेरे जलाल को देखें। (यूहन्ना 17:24)

► **मसीह अपने शागिर्दों के लिए क्या माँगता है?**

यह कि शागिर्द उसके साथ रहें और एक दिन उसके पास हों।

► **तब वह क्या देखेंगे?**

उसका जलाल।

लेकिन इस दुनिया में रहते हुए भी शागिर्दों को उसकी हिमायत हासिल होगी। दुआ के आख़िर में मसीह ने एक वादा पेश किया,

> मैंने तेरा नाम उन पर ज़ाहिर किया और इसे ज़ाहिर करता रहूँगा ताकि तेरी मुझसे मुहब्बत उनमें हो और मैं उनमें हूँ। (यूहन्ना 17:26)

► **वादा क्या है?**

यह कि आइंदा भी मसीह ख़ुदा का नाम शागिर्दों पर ज़ाहिर करता रहेगा।

► **नाम ज़ाहिर करने की क्या ज़रूरत रहती है?**

नाम ज़ाहिर करने की ज़रूरत इसलिए रहती है कि ख़ुदा बाप की मुहब्बत और मसीह ख़ुद शागिर्दों में रहें।

ग़रज़, जब हम ईसा मसीह के साथ जुड़ जाते हैं जो अंगूर की बेल है तब हमें पक्का यक़ीन हो जाता है कि जहाँ वह है वहाँ हम भी एक दिन होंगे।

► **क्या आपको यह यक़ीन हासिल है कि आप एक दिन उसी के पास होंगे?**

ईसा मसीह अंगूर की बेल है। जो उसके साथ जुड़ जाता है वह उसके जलाल में शरीक हो जाता है। उसके रगों में उसका रस दौड़ता है, इसलिए वह तबदील हो जाता है। ख़ुदा बाप जो बेल का माली है उसे तमाम शाख़ों समेत शैतानी ताक़तों से महफ़ूज़ रखता है। क्योंकि उसकी शाख़ें मीठा और रसीला फल लाने के लिए मख़सूस की गई

हैं। सारी शाख़ें एक हैं, क्योंकि सब बेल से जुड़ी हुई हैं, और यही वजह है कि सबके सब एक दिन मसीह के पास होंगे।

इंजील, यूहन्ना 17:1-26

यह कहकर ईसा ने अपनी नज़र आसमान की तरफ़ उठाई और दुआ की, “ऐ बाप, वक़्त आ गया है। अपने फ़रज़ंद को जलाल दे ताकि फ़रज़ंद तुझे जलाल दे। क्योंकि तूने उसे तमाम इनसानों पर इख़्तियार दिया है ताकि वह उन सबको अबदी ज़िंदगी दे जो तूने उसे दिए हैं। और अबदी ज़िंदगी यह है कि वह तुझे जान लें जो वाहिद और सच्चा ख़ुदा है और ईसा मसीह को भी जान लें जिसे तूने भेजा है। मैंने तुझे ज़मीन पर जलाल दिया और उस काम की तकमील की जिसकी ज़िम्मेदारी तूने मुझे दी थी। और अब मुझे अपने हुज़ूर जलाल दे, ऐ बाप, वही जलाल जो मैं दुनिया की तख़लीक़ से पेशतर तेरे हुज़ूर रखता था।

मैंने तेरा नाम उन लोगों पर ज़ाहिर किया जिन्हें तूने दुनिया से अलग करके मुझे दिया है। वह तेरे ही थे। तूने उन्हें मुझे दिया और उन्होंने तेरे कलाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारी है। अब उन्होंने जान लिया है कि जो कुछ भी तूने मुझे दिया है वह तेरी तरफ़ से है। क्योंकि जो बातें तूने मुझे दीं मैंने उन्हें दी हैं। नतीजे में उन्होंने यह

बातें क़बूल करके हक़ीक़ी तौर पर जान लिया कि मैं तुझमें से निकलकर आया हूँ। साथ साथ वह ईमान भी लाए कि तूने मुझे भेजा है।

मैं उनके लिए दुआ करता हूँ, दुनिया के लिए नहीं बल्कि उनके लिए जिन्हें तूने मुझे दिया है, क्योंकि वह तेरे ही हैं। जो भी मेरा है वह तेरा है और जो तेरा है वह मेरा है। चुनाँचे मुझे उनमें जलाल मिला है। अब से मैं दुनिया में नहीं हूँगा। लेकिन यह दुनिया में रह गए हैं जबकि मैं तेरे पास आ रहा हूँ। क़ुद्दूस बाप, अपने नाम में उन्हें महफ़ूज़ रख, उस नाम में जो तूने मुझे दिया है, ताकि वह एक हों जैसे हम एक हैं। जितनी देर मैं उनके साथ रहा मैंने उन्हें तेरे नाम में महफ़ूज़ रखा, उसी नाम में जो तूने मुझे दिया था। मैंने यों उनकी निगहबानी की कि उनमें से एक भी हलाक नहीं हुआ सिवाए हलाकत के फ़रज़ंद के। यों कलाम की पेशगोई पूरी हुई। अब तो मैं तेरे पास आ रहा हूँ। लेकिन मैं दुनिया में होते हुए यह बयान कर रहा हूँ ताकि उनके दिल मेरी ख़ुशी से भरकर छलक उठें। मैंने उन्हें तेरा कलाम दिया है और दुनिया ने उनसे दुश्मनी रखी, क्योंकि यह दुनिया के नहीं हैं, जिस तरह मैं भी दुनिया का नहीं हूँ। मेरी दुआ यह नहीं है कि तू उन्हें दुनिया से उठा ले बल्कि यह कि उन्हें इबलीस से महफ़ूज़ रखे। वह दुनिया के नहीं हैं जिस तरह मैं भी दुनिया का नहीं हूँ। उन्हें सच्चाई के वसीले से

मख़सूसो-मुक़द्दस कर। तेरा कलाम ही सच्चाई है। जिस तरह तूने मुझे दुनिया में भेजा है उसी तरह मैंने भी उन्हें दुनिया में भेजा है। उनकी ख़ातिर मैं अपने आपको मख़सूस करता हूँ, ताकि उन्हें भी सच्चाई के वसीले से मख़सूसो-मुक़द्दस किया जाए।
मेरी दुआ न सिर्फ़ इन्हीं के लिए है, बल्कि उन सबके लिए भी जो इनका पैग़ाम सुनकर मुझ पर ईमान लाएँगे ताकि सब एक हों। जिस तरह तू ऐ बाप, मुझमें है और मैं तुझमें हूँ उसी तरह वह भी हममें हों ताकि दुनिया यक़ीन करे कि तूने मुझे भेजा है। मैंने उन्हें वह जलाल दिया है जो तूने मुझे दिया है ताकि वह एक हों जिस तरह हम एक हैं, मैं उनमें और तू मुझमें। वह कामिल तौर पर एक हों ताकि दुनिया जान ले कि तूने मुझे भेजा और कि तूने उनसे मुहब्बत रखी है जिस तरह मुझसे रखी है।
ऐ बाप, मैं चाहता हूँ कि जो तूने मुझे दिए हैं वह भी मेरे साथ हों, वहाँ जहाँ मैं हूँ, कि वह मेरे जलाल को देखें, वह जलाल जो तूने इसलिए मुझे दिया है कि तूने मुझे दुनिया की तख़लीक़ से पेशतर प्यार किया है। ऐ रास्त बाप, दुनिया तुझे नहीं जानती, लेकिन मैं तुझे जानता हूँ। और यह शागिर्द जानते हैं कि तूने मुझे भेजा है। मैंने तेरा नाम उन पर ज़ाहिर किया और इसे ज़ाहिर करता रहूँगा ताकि तेरी मुझसे मुहब्बत उनमें हो और मैं उनमें हूँ।”